परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

चारभुजा प्रवास : चारों ओर उल्लास

परम पावन आचार्यवर के चारभुजा में त्रिदिवसीय प्रवास में चारों ओर उल्लास ही उल्लास दृष्टिगोचर हो रहा था। २१ जून को आचार्यवर के शुभागमन अवसर पर आयोजित भव्य और व्यवस्थित जुलूस सर्वत्र प्रशंसा का विषय बना हुआ था। पूज्यप्रवर के इस प्रवास में सभी प्रवासी तेरापंथी परिवारों ने घर खोलकर उपासना का भरपूर अवसर प्राप्त किया। मुम्बई महानगर में रहने वाले युवकों के लिए आचार्यप्रवर की इस प्रकार निकट सेवा का दुर्लभ अवसर था। अन्य जैन परिवारों ने भी बड़ी संख्या में अपने घर खोल कर प्रवास का लाभ उठाया। स्थानीय जैनेतर समाज का भी उल्लास अवर्णनीय था। गांव में सर्वत्र अनायोजित उत्सव का सा माहौल था। इस प्रवास में न केवल मानवों का अपितु प्रकृति का भी उल्लास देखने को मिला। मूसलाधार बारिश से प्रकृति ने मानों अपने उल्लास की अभिव्यक्ति दी।

२२ जून। चारभुजा प्रवास का मध्य दिन। पूज्यप्रवर प्रातः अनेक घरों का स्पर्श करते हुए निर्मीयमाण 'महाश्रमण विहार' में पधारे। यहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ समाज की ओर से पूज्यचरण का श्रद्धासिक्त अभिनंदन किया गया। आचार्यप्रवर ने सबको धार्मिक संबोध प्रदान किया। यहां से आचार्यप्रवर रोकड़िया हनुमान मंदिर की ओर पधारे। दोनों ओर खड़े विशाल पर्वतों पर अवस्थित हरे-भरे वृक्ष मार्ग को रमणीय बनाए हुए थे। मेघाच्छादित आकाश और शीतल बयार राहगीरों को प्रकृति के आनंद में सराबोर कर रहे थे। महंत श्री नारायणदासजी ने अपने सहवर्ती सन्यासियों के साथ आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। मंदिर अवलोकन के पश्चात आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री बजरंगदासजी महाराज ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। परमाराध्य आचार्यवर ने उपस्थित जनता को रामायण का प्रसंग सुनाते हुए महापुरुषों के पदचिन्हों पर चलने हेतु प्रेरित किया। तत्पश्चात आचार्यवर ने अनेक घरों और चारभुजा तेरापंथ भवन का भी स्पर्श किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर का 'उत्तराध्ययन और श्रीमद्भगवद्गीता' विषय पर प्रभावक प्रवचन हुआ। आचार्यवर ने दोनों ग्रन्थों के विभिन्न लोकों की व्याख्या करते हुए इनके सदुपदेश को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में जैनेतर समाज भी बड़ी संख्या में उपस्थित था। एक जैनाचार्य के मुख से गीता की सटीक व्याख्या सुनकर सभी आश्चर्यचकित थे।

पूज्यवर अपराह्न में यहां के विख्यात श्री चारभुजानाथ मंदिर परिसर में पधारे। स्थानीय पुजारियों आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया और मंदिर की ऐतिहासिकता आदि की अवगति दी। मंदिर के अवलोकन के पश्चात परिसर के सामने स्थित नंगारखाने में आयोजित कार्यक्रम में पुजारीवर्ग की ओर से आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की गई। आचार्यप्रवर के दर्शन और प्रवचन श्रवण के लिए यहां जनता का सैलाब सा उमड़ पड़ा। मंदिर के प्रवेश द्वार पर अवस्थित सीढियां, बरामदा मुख्य सड़क आदि सभी स्थान उस सैलाब को समेटने में असमर्थ थे। आचार्यवर ने अपने वक्तव्य में वीतराग भक्ति के महत्त्व को उजागर करते हुए 'प्रभु म्हारै मन मंदिर में पधारो...' गीत का संगान किया तो उपस्थित जनसमूह झूम उठा। आचार्यवर की प्रेरणा से भूतपूर्व सरपंच श्री हीरालालजी गुर्जर ने बीड़ी का परित्याग किया और अन्य अनेक लोगों ने भी नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। इस अवसर पर श्री धनदान देथा, विकास अधिकारी कुंभलगढ़ ने भी आचार्यवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

रात्रि में पूज्य आचार्यवर के सान्निध्य में पारिवारिक सेवा का क्रम चला। आचार्यवर की पावन प्रेरणा से अनेक लोगों ने माला फेरने, सामायिक करने और नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। पारिवारिक सेवा के पश्चात मुख्य पंडाल में भजन संध्या का कार्यक्रम रहा, समागत संगायकों ने अपनी प्रस्तुतियों से जनता को अन्त तक बांध कर रखा। मध्य रात्रि में बादलों की तेज गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार बारिश हुई। पानी के तेज बहाव के कारण आचार्यप्रवर और मुनिवृंद को शयन का स्थान

२३ जून। परमपूज्यवर की सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा समायोजित त्रिदिवसीय अष्टम राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन की परिसंपन्नता प्रातःकालीन कार्यक्रम में हुई। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुम्बई कन्यामंडल ने मंगल गीत का संगान किया। सुश्री मेघा बैंगानी और सुश्री वर्षा दक ने अधिवेशन के अनुभव प्रस्तुत किए। नव पदार्थ पर आधारित 'पुण्य-पाप' पुस्तक की संकलनकर्त्री श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने पुस्तक के सदंर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा और श्रीमती प्रेम सेठिया ने पुस्तक की प्रथम प्रति श्रीचरणों में समर्पित की। सूरत कन्यामंडल संयोजिका मनीषा बोहरा और सुश्री धरती धोका ने 'महात्मा महाप्रज्ञ' पुस्तक पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म की सी.डी. पूज्यवर को उपहृत की। चारभुजा तेरापंथी सभा के मंत्री की संपतजी सिंघवी और दृष्टि मादरेचा ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा ने अधिवेशन की अवगति देते हुए बताया--'अ.भा. ते.म.म. द्वारा आयोजित और चारभुजा तेरापंथ समाज द्वारा प्रायोजित इस अधिवेशन में देश के विभिन्न प्रान्तों के करीब ५० कन्या मंडलों की लगभग २५० कन्याएं संभागी बनीं। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में मुख्यतया 'संतुलन' विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। इस विषय पर संभागी कन्याओं को आचार्यप्रवर से पावन पाथेय तथा साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी की प्रेरणा के अतिरिक्त अनेक साध्वियों, समणीवृंद तथा गृहस्थ प्रशिक्षकों से भी प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। इसके साथ पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'हैप्पी एण्ड हारमोनियस फैमिली' और श्रीमज्जयाचार्य की कृति 'चौबीसी' पर प्रतियोगिताएं भी समायोजित हुई।' अपने वक्तव्य में श्रीमती बरमेचा ने कन्या मंडलों द्वारा देशभर में संचालित गतिविधियों की भी अवगति दी।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने संतुलित जीवन के लिए प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत श्वासप्रेक्षा के प्रयोगों का अभ्यास करने की प्रेरणा दी। महिला मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलताजी ने कन्याओं को भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन स्थापित करने हेतु प्रेरित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने अपने वक्तव्य में कहा--सफलता को अर्जित करने के लिए दुनिया की प्रतिस्पर्धा में न पड़कर अपनी मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए आत्मकेन्द्रित बनने का प्रयास करें। स्वस्थ दिमाग, संवेदनशील दिल और सक्षम हाथों के साथ आगे बढ़ने वाला सदा सफल होता है। सहनशीलता और संतुलित जीवन जीने वाला व्यक्ति हर क्षेत्र में वैशिष्ट्य को प्राप्त कर सकता है।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'कन्याओं के सामने संभावित लम्बा भविष्य होता है। उनका भविष्य और जीवन अच्छा रहे, वे विकास कर सकें, तदर्थ उन्हें संकल्पित, प्रेरित और तैयार करने तथा संपोषण देने की अपेक्षा होती है। इस दृष्टि से इस अधिवेशन की उपयोगिता प्रतीत हो रही है। यह एक सुन्दर उपक्रम है। तीन दिनों में कन्याओं को अच्छी खुराक दी जा सकती है और उसकी सुन्दर निष्पत्ति भी सामने आ सकती है' आचार्यवर ने आगे कहा 'कन्या को देहली के दीपक के समान कहा गया है। वह घर और ससुराल दोनों को प्रकाशित कर सकती है। किन्तु उसके लिए आवश्यक है कि पहले वह स्वयं प्रकाशित बने, उसमें ज्ञान का प्रकाश हो। कन्याओं में लौकिक विद्या का विकास हो रहा है, मैं उसकी उपेक्षा नहीं करता। किन्तु वे अलौकिक विद्या (अध्यात्म विद्या) में भी निष्णात बनें। महिला मंडल पाठ्यक्रम के माध्यम से तत्त्वज्ञान को विकसित कराने हेतु बहुत ही सुन्दर कार्य कर रहा है। पहले मेरे मन में अनेक बार विचार आता था कि तत्त्वज्ञानी श्रावक-श्राविकाओं की संख्या घटती जा रही हैं, किन्तु अब लगता है कि महिला मंडल के इस प्रयास से अनेक व्यक्ति तत्त्वज्ञानी बन जाएंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब पचास कन्याएं भी इस पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हैं, यह संख्या और भी वर्धमान हो।

आचार्यवर ने कन्याओं को उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु विनम्रता, सहिष्णुता और अनालस्य को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की तथा इस वर्ष श्रावक सम्बोध कंठस्थ करने हेतु भी प्रेरित किया। पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन में गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण दिवस दिनांक के अनुसार आज होने का

उल्लेख करते हुए उन्हें सादर श्रद्धांजलि समर्पित की। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने चारभुजा के स्व. मुनि नथमलजी का भी ससम्मान स्मरण किया। कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती कुमुद कच्छारा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन कन्यामंडल प्रभारी श्रीमती पूनम गुजरानी ने किया।

दिन एक संस्मरण अनेक

२३ जून। चारभुजा प्रवास के अन्तिम दिन आचार्यवर के आसपास अनेक संस्मरण घटित हुए। कतिपय संस्मरण पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं-

- परमपूज्य आचार्यवर ने प्रातः मुखारविन्द का लुंचन किया। उसके पश्चात मुनिवृन्द ने पूज्यवर को वंदना की और निवेदन किया--कृपाकर हमें भी निर्जरा में सहभागी बनाएं। आचार्यवर ने फरमाया--तुम लोग तो खुद भी मुंह का लोच करते हो, इस दृष्टि से हमारे साथ ही हो। तुम लोगों को क्या सहभागी बनाएं? आचार्यवर की स्नेहमयी वाणी को सुनकर मुनिवृन्द आह्लादित स्वरों में बोले--गुरुदेव! फिर भी कृपा कराएं। आचार्यवर ने उन्हें आधा घंटा जप, ध्यान अथवा आगम स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर जब प्रवचन में पधारे, तब उपस्थित श्रावक समाज ने भी लुंचन की सुखपृच्छा करते हुए निर्जरा में सहभागी बनाने हेतु निवेदन किया। पूज्यप्रवर ने विनोद के लहजे में फरमाया--आप लोग तो हमारे कितने सहभागी बनेंगे। हम तो पैदल विहार करते हैं, रात्रि में चौविहार त्याग रखते हैं और भी अनेकानेक कठोर नियम पालते हैं। इन सबमें आप हमारे कितने सहभागी बनते हैं। यदि बनना ही है तो पूरे सहभागी बनें। आचार्यवर की विनोदयुक्त प्रेरणा को सुनकर पूरी सभा में मुस्कुराहट फैल गयी। आचार्यवर ने श्रावक समाज को नियम के अतिरिक्त ११ सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की।
- कार्यक्रम में आचार्यवर ने कन्या अधिवेशन को संबोधित करते हुए विनोद की भाषा में फरमाया--'इस अधिवेशन में साध्वीप्रमुखाजी पूरी तरह लगी हुई हैं, इसलिए हमारे पास कुछ आना भी बन्द-सा कर दिया। प्रायः प्रवचन के बाद हमारी मीटिंग होती है। उस मीटिंग में आना ही छोड़ दिया। हालांकि हमारी स्वीकृति पूर्वक ही छोड़ा है...। कहने का तात्पर्य है कि कन्याओं के विकास के लिए कितना समर्पण का भाव है।
- कार्यक्रम में उपस्थित कन्याओं को अनालस्य की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने फरमाया 'साध्वीप्रमुखाजी कितना श्रम करती हैं, साध्वियों की व्यवस्था में सहयोग, लोगों को संभालना, स्वाध्याय, साहित्य संपादन, घरों में जाना आदि एक दिन में कितने-कितने कार्य कर लेती हैं। वैसे अवस्था में मुझसे बड़ी हैं। हालांकि अवस्था इतनी खास बात नहीं है। अभी तो सत्तर वर्ष की अवस्था है। आगे कभी नब्बे कभी सौ... ।' आचार्यवर की आशीर्वादपूर्ण वाणी को सुन साध्वीप्रमुखाजी ने खड़े होकर पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर ऐसा आशीर्वाद दिराएं कि जीवनभर यथाशक्ति कार्य करती रहूं।'
- आचार्यवर ने प्रवचन में कन्याओं को सहिष्णुता की प्रेरणा देते हुए फरमाया--'कन्याओं के लिए तीन घर हैं। दो घर तो प्रायः प्रसिद्ध हैं। तीसरा हमारा (साध्वी समाज का) घर है।' साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'पूज्यवर ने ठीक ही फरमाया कि कन्याओं के तीन घर होते हैं। वे दो घर तो पराये कहलाते हैं। क्योंकि विवाह से पहले पीहर वाले कहते हैं कि यह पराये घर में जाएगी और विवाह के बाद ससुराल वाले कहते हैं कि यह पराये घर से आई है। अतः कन्या के लिए उसका अपना घर पूज्यवर के चरणों में ही है।'
- पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात चारभुजावासियों ने मेवाड़ स्तरीय मंगलभावना समारोह चारभुजा में करने हेतु पूज्यप्रवर से निवेदन किया। एक भाई बोला--'यहां आपके नाम से महाश्रमण विहार निर्माणाधीन है। वह आपका ही मकान है' अतः उसमें तो पुनः आना ही...। भाई की बात पूरी होने से पहले ही आचार्यप्रवर ने स्पष्ट फरमाया--'मकान हमारा नहीं है। हमारा कोई भी मकान नहीं है...' उपस्थित सम्पूर्ण जनता आचार्यप्रवर की जागरूकता को देखकर और स्पष्टोक्ति को

सुनकर मंत्रमुग्ध थी।

- चारभुजा प्रवास के द्वितीय दिन आचार्यवर ने अधिकांश जैन घरों का स्पर्श किया। कतिपय घर अवशिष्ट रह गए। रात्रि में मूसलाधार बारिश और सुबह तक बूंदाबांदी के कारण तीसरे दिन प्रातःकाल भी वे घर पूज्यवर के चरणस्पर्श से वंचित रहे। वंचित श्रावकों में कुछ उदासी का भाव आना स्वाभाविक था। जब उन श्रावकों ने पूज्यवर से उनके घरों में पधारने का अनुरोध किया, तब उन्हें आश्वस्त करते हुए आचार्यवर ने फरमाया--'जब तक आपके घरों का स्पर्श न कर लूं, तब तक चारभुजा से विहार करने का भाव नहीं है। भक्तवत्सल आचार्यवर के मुखारविन्द से इतना सुनते ही श्रावकों के मुख पर छाई उदासी का स्थान परम प्रसन्नता ने ले लिया और जब आचार्यवर सायंकालीन आहार के बाद उनके घरों में पधारे, तब उनका उल्लास अनिर्वचनीय था।
- सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात बालमुनियों से वात्सल्यपूर्ण वाणी में बतियाते हुए आचार्यवर ने फरमाया-- 'मुनि मृदुकुमारजी के लिए अंग्रेजी में एक दोहा बनाया है।' आचार्यवर ने वह दोहा और उसका अर्थ फरमाते हुए बाल मुनि को तदनुरूप बनने की प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात पूज्यप्रवर ने बाल मुनि शुभंकरजी से पूछा--'आजकल क्या सीखते हो?' वे बोले--'गुरुदेव, इन दिनों पक्का और चितारना करता हूं' आचार्यवर ने उनसे कहा--'पक्का और चितारना करना अच्छा है। किन्तु प्रतिदिन कण्ठस्थ भी किया करो। यदि तुम प्रतिदिन तीन लोक सीखोगे तो तुम्हें प्रतिदिन एक कल्याणक बक्सीस के रूप में मिलेगा।' बालमुनि ने आचार्यवर के वचनों को सविनय स्वीकार किया। आचार्यवर ने उसके बाद मुनि अनुशासन कुमारजी से पूछा 'तुम क्या कण्ठस्थ कर रहे हो?' उन्होंने सकुचाते हुए आचार्यवर से निवेदन किया--'गुरुदेव, कभी-कभी कालुकौमुदी सीखता हूं।' आचार्य ने उन्हें फरमाया--कभी-कभी नहीं अभी-अभी होना चाहिए। प्रतिदिन कुछ न कुछ कण्ठस्थ करने का क्रम रखो।' इस प्रकार आचार्यवर से वात्सल्यपूर्ण और मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रेरणा प्राप्त कर बालमुनि प्रमुदित थे और आचार्यवर की प्रेरणा को साकार करने हेतु मन में उठने वाला संकल्प का भाव उनके चेहरों पर प्रतिबिम्बित हो रहा था।

झीलवाड़ा में भव्य स्वागत

२४ जून। परम श्रद्धेय आचार्यवर प्रातः चारभुजा से प्रस्थान करने से पूर्व श्री भैंरूलाल मेहता के आवास पर पधारे। उनके अड़तीस वर्षीय अनुज श्री किरण मेहता का कल सूरत में हृदयघात से आकस्मिक देहावसान हो गया। उस समय उनका पूरा परिवार आचार्यवर के प्रवास में चारभुजा में सेवा का लाभ ले रहा था। इस हृदय विदारक घटना से आहत उनकी धर्मपत्नी, पुत्रियों और अन्य परिवारजनों को आचार्यवर ने संबल प्रदान किया और पार्थिव देह के पास मंगलपाठ सुनाया।

परम पूज्यपाद चारभुजा से ५.७ किमी. का विहार कर झीलवाड़ा में पधारे। महातपस्वी आचार्यवर के पदार्पण से झीलवाड़ा का कण-कण पुलकित था। आचार्यवर के स्वागत हेतु तेरापंथ समाज के साथ अन्य जैन समाज ने पलक पांवड़े बिछा दिए। पूज्यप्रवर भव्य स्वागत जुलूस के साथ श्री प्रकाश भंवरलाल सिंघवी के आवास पर पधारे। आचार्यवर का प्रवास यहीं हुआ। पूरा सिंघवी परिवार अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर हर्षविभोर था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल, तेरापंथी सभा के मंत्री श्री भैंरुलालजी सिंयाल मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिसोदिया, श्री मनोहर सिसोदिया, श्रीमती जया कोठारी ने अपने गांव मे पूज्यप्रवर का अभिनंदन किया। मेवाड़ कान्फ्रेस के अध्यक्ष श्री बसन्तीलाल बाबेल, श्री रमेश धाकड़, श्री महेन्द्र कर्णावट ने पूज्यप्रवर की मेवाड़ यात्रा के संदर्भ में विचार अभिव्यक्त किए। श्री कुबेरसिंह सोलंकी ने कार्यक्रम में उपस्थित झीलवाड़ा के सभी सत्तर राजपूत परिवारों की ओर से आचार्यवर की अभ्यर्थना की। जानवी, निशीका, आइन्स ओर मनन सिंघवी ने बालस्वरों में आचार्यवर का स्वागत किया। कार्यक्रम में जैन समाज के अतिरिक्त जैनेतर समाज भी बड़ी संख्या में उपस्थित था। पूज्य आचार्यप्रवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात स्थानीय जैनघरों और जैन मंदिर का स्पर्श किया। पारिवारिक सेवा के दौरान पूज्यप्रवर ने श्रद्धालुओं को पावन पाथेय प्रदान किया।

सेवन्त्री में द्विदिवसीय प्रवास

२५ जून। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः झीलवाड़ा से ११.५ कि.मी. का विहार कर सेवन्त्री पधारे। मार्गवर्ती वागुन्दा के ग्रामीणों ने आचार्यवर के दर्शन कर प्रेरणा प्राप्त की। अनेक लोगों ने आचार्यप्रवर से नशे का परित्याग भी किया। आचार्यप्रवर गोमती नदी के उद्गम स्थल पर बनाई गई लक्ष्मण झूले की प्रतिकृति और तत्रस्थ राममंदिर का अवलोकन करते हुए सेवन्त्री में प्रविष्ट हुए। सेवन्त्री की सीमा पर स्थित सघन आम्रवृक्षों की छाया और शीतल हवा के साथ आने वाली भीनी-भीनी महक राहगीरों को प्रकृति के आनंद में गोते लगाने के लिए विवश कर रही थी। आराध्य के स्वागत में स्थानीय जनता का उत्साह और उल्लास चरम पर था। पूज्यप्रवर ने जुलूस के पथ में दर्शायी गयी भगवान महावीर के जीवन से सम्बद्ध झांकियों का भी अवलोकन किया। आचार्यप्रवर का प्रवास श्री इन्द्रवदन, धूलचन्द कोठारी के आवास पर रहा। स्व. धूलचन्दजी कोठारी के पांच पुत्रों का यह कोठारी परिवार अपने प्राङ्गण को पूज्यचरण से पावन बना हुआ देखकर अत्यधिक आह्लाद की अनुभूति कर रहा था। उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्यवर ने इसी वर्ष स्व. धूलचन्दजी को मरणोपरान्त 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' के सम्बोधन से सम्बोधित किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्य नियोजिकाजी ने जनता को संबोधित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में श्रोताओं को भोग, राग, मनोरंजन और प्रवृत्ति पर क्रमशः योग, त्याग, आत्मरंजन और निवृत्ति का अंकुश रखने हेतु प्रेरित किया। आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री इन्द्रवदन कोठारी, महिला मंडल और श्रीमती सुरेखा कोठारी ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम के पश्चात आचार्यवर स्थानीय सभा द्वारा निर्मीयमाण महाश्रमण निलय में पधारे। भवन के लोकार्पणकर्ता श्रीमती सोसरबाई स्व. हरकचन्दजी मेहता परिवार सहित संपूर्ण समाज ने आचार्यवर से संबोध प्राप्त कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

अपराह्न में अनेक ग्रामीणों ने पृथक-पृथक रूप में श्रीचरणों में उपस्थित होकर अपनी दुर्बलताओं के परित्याग का संकल्प अभिव्यक्त किया। आचार्यवर की सन्निधि में आयोजित रात्रिकालीन कार्यक्रम के पश्चात कवि सम्मेलन का उपक्रम रहा। समागत कवियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। पहाड़ों से घिरे इन क्षेत्रों में चलने वाली ठंडी हवाएं रात्रि में ठिठुराती हैं। इस कारण रात्रिशयन प्रायः कमरों में ही करना पड़ता है। गर्मी से प्रभावित क्षेत्रों से पहुंचने वाले दर्शनार्थी यहां आकर राहत का अनुभव करते हैं।

२६ जून। सेवन्त्री प्रवास का द्वितीय दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सभी स्थानीय जैन घरों का स्पर्श किया। जैनेतर समाज के भी अनेक घर आचार्यवर के चरणस्पर्श से पावन बने।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम पावन आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में पापकर्मों से मुक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने श्रीडूंगरगढ़ और बीदासर में दिवंगत क्रमशः साध्वी सिरेकुमारीजी (सुजानगढ़) और साध्वी कानकुमारीजी (लाडनूं) के संदर्भ में उद्गार व्यक्त करते हुए उनकी स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश सेवन्त्री की स्व. साध्वी सजनांजी का भी स्मरण किया।

अपराह्न में आचार्यवर यहां के श्रीरूपनारायण मंदिर में पधारे। मंदिर अवलोकन के पश्चात संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने उपस्थित जनता को जीवनोपयोगी प्रेरणा दी। आचार्यप्रवर के आह्वान पर पुजारी नाथूलालजी ने भांग, प्रेमशंकरजी और पुरुषोत्तमजी ने तम्बाकू सेवन का परित्याग किया। अन्य अनेक पुजारी भी नशामुक्ति हेतु संकल्पित हुए।

आचार्यप्रवर के इस दो दिवसीय प्रवास में संपूर्ण सेवन्त्री में धर्म का माहौल बना रहा। न केवल तेरापंथ समाज के सभी प्रवासी परिवारों ने अपने घर खोलकर पूज्यवर के दर्शन, प्रवचन श्रवण और उपासना से अपने जीवन को धन्य बनाया। अपितु अन्य जैन और जैनेतर समाज भी निकटता से लाभान्वित हुआ।

मन की बात जान ली

सायंकालीन आहार के पश्चात फिल्मी जगत से सम्बद्ध श्री विक्रम प्रतापसिंह चौहान (ब्यावर) और जय ठक्कर (पावागढ) नामक दो भाई श्रीचरणों में उपस्थित हुए। वे सूटिंग के सिलसिले में मेवाड़ आए हुए हैं। जानकारी मिलने पर वे पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ सेवन्त्री आए। आचार्यवर को अपना परिचय देते हुए जय ठक्कर ने गुरु अभ्यर्थना में गीत का संगान किया। आचार्यवर ने उनसे पूछा--नशा करते हो? इस पर जय ने उत्तर दिया--गुरुजी, मैं तो जाति से ब्राह्मण हूं। मैं तो नशा नहीं करता। किन्तु यह राजपूत है। इसके पूरे परिवार में ही शराब का प्रचलन है। आचार्यवर ने विक्रम प्रतापसिंह को नशा छोड़ने हेतु प्रेरित किया तो वह भावुक होकर बोला--'गुरुजी, मैं रास्ते भर यही सोच रहा था कि मैं वहां जा रहा हूं और वहां जाते ही गुरुजी शराब छोड़ने के लिए कह देंगे तो मैं इसे छोड़ दूंगा। आपने मेरे मन की बात जान ली। मैं मान गया कि वास्तव में आप में तेज है, सत है। मैं धन्य हो गया। मैं शराब छोड़ दूंगा और जब कभी इसकी याद आएगी तो मैं आपको याद करके इससे दूर रहूंगा।

पानी ने किया पांच को पन्द्रह

२७ जून। परम पूज्यपाद प्रातः सेवन्त्री से करीब पन्द्रह किमी. का विहार कर साथीया पधारे। यद्यपि कच्चे पथ से यह दूरी मात्र पांच किलोमीटर ही थी। किन्तु इस पहाड़ी मार्ग में एकत्रित हुए बारिश के पानी के कारण दस किलोमीटर का अतिरिक्त विहार करना पड़ा। परमाराध्य आचार्यप्रवर चारभुजा होते हुए साथीया में प्रविष्ट हुए। मध्यवर्ती बोरड़ गांव में पूज्यप्रवर ने ग्रामीणों को संबोध प्रदान किया। अनेक व्यक्ति आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्त बने। साथीया में मात्र एक तेरापंथी परिवार है। सिंघवी परिवार अपने आस्थान को अपने गांव में पाकर प्रमुदित था। अन्य जैन और जैनेतर लोग भी आचार्यवर के प्रवास को पाकर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। आचार्यवर का प्रवास श्री लहरीबाई घासीरामजी जैन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। आचार्यवर के इंगितानुसार साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने आज का प्रवास चारभुजा में ही किया।

प्रातःकालीन प्रवचन में परमश्रद्धेय आचार्यवर ने धर्म के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए उसे दृढ़ता के साथ आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। किसान सम्मेलन में उपस्थित कृषकों को भी आचार्यवर से पाथेय प्राप्त हुआ। अनेक किसानों ने आचार्यवर से नशे का प्रत्याख्यान किया। पूज्यप्रवर सायंकालीन आहार के पश्चात स्थानीय जैन घरों में पधारे। पारिवारिक सेवा के दौरान आचार्यप्रवर ने सबको आध्यात्मिक संबोध प्रदान किया।

संबोधि में संबोधप्रदाता का शुभागमन

२८ जून। जन-जन को पावन संबोध प्रदान करने वाले परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः साथीया से करीब तेरह किलोमीटर का विहार कर त्रिदिवसीय प्रवास हेतु संबोधि उपवन में पधारे। संबोधि उपवन में प्रवासित मुनि श्री शुभकरणजी आदि मुनिवृंद ने आचार्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। आचार्यवर का प्रवास परिसर में स्थित 'प्रज्ञा प्रदीप' नामक भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महामंत्रोच्चार के पश्चात कन्याओं ने मंगलसंगान प्रस्तुत किया। संबोधि उपवन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री खुमाणसिंह डागरा, प्रज्ञा पर्व स्वागत समिति की स्वागताध्यक्षा श्रीमती प्रकाशदेवी तातेड़, श्रीमती मोहनीदेवी बैद ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। श्री साग हिरण ने उपवन से संबद्ध पुस्तक पूज्य चरणों में समर्पित की। भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री सुमतिलाल कर्णावट और श्री बंजरगदासजी महाराज ने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। मुनिश्री भवभूतिजी ने उल्लासपूर्ण स्वरों में आचार्यप्रवर का अभिनंदन किया। मुनिश्री शुभकरणजी ने ग्याहरवें अधिशास्ता के रूप में आचार्यवर को प्रथम बार साक्षात वर्धापित किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगलप्रवचन में संयम और अनासक्ति की प्रेरणा प्रदान की। सम्बोधि

उपवन में समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मेवाड़ की यात्रा करते-करते आज हम संबोधि उपवन आए हैं। इस यात्रा में मेवाड़ प्रवासित मुनिश्री शुभकरणजी स्वामी के सिंघाड़े से ही मेरा मिलना अवशिष्ट था, जो आज हो गया। मुनिश्री हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ मुनिप्रवर हैं। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के पास लम्बे समय तक रहे हुए हैं। आचार्यश्री का महाप्रयाण आपको ज्यादा अखर सकता है, किन्तु आप तो साधक सन्त हैं, इसलिए इसे समभाव से सह सकते हैं। मुनिश्री भवभूतिजी स्वामी भद्र, भले और भक्तिमान संत हैं, खूब स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि करते रहें। मुनिश्री शुभकरणजी स्वामी के सहवर्ती मुनि सौम्यकुमारजी ने पहले ही दर्शन कर लिए थे। ये भी साधना, तत्त्वज्ञान, सेवाभाव, नैर्मल्य आदि बढ़े, ऐसा प्रयास करते रहें। यहां आकर मैं स्व. मुनि विनोदकुमारजी स्वामी की भी सम्मान के साथ स्मृति करता हूं। वे मुनिश्री शुभकरणजी के सहवर्ती और हमारे साथी मुनि थे। काफी निर्मल, समझदार, विवेकशील और होनहार सन्त थे। कोई नियति का योग था कि वे अल्पावस्था में दिवंगत हो गये। उनकी आत्मा अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ती हुई परमश्री को प्राप्त करे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुनीता जैन ने किया।